घर में बरकत

हज़रत इब्राहीम का हैरानकुन जवाब

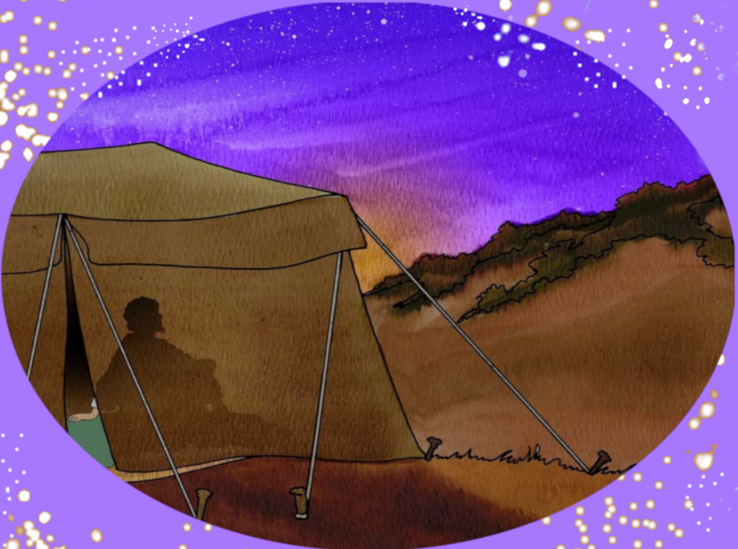

ghar meṅ barkat. hazrat ibrāhīm kā hairānkun jawāb

Barakah in the Home. The Amazing Answer of Ibrahim

by Bakhtullah

[*Zinda Kalam 4*]

(Urdu—Hindi script)

© 2026 Chashma Media.
published and printed by
GWCS, New Delhi

Bible text is from UGV.

illus. R. Gunther
https://freebibleimages.org/illustrations/ls-abram/
partially modified by OpenAI; J.P. Stanley
https://freebibleimages.org/illustrations/yo-abram-promise/
(modified)

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

मेरे पीछे हो लेना	1
मुझसे चिमटा रहना	5
मुझ पर भरोसा रखना	8
शक मत करना	10
तब बरकत यक़ीनी है	13
तौरेत, पैदाइश 12-18	15

घर में बरकत कैसे लाएँ? इस सवाल के बहुत जवाब दिए गए हैं। लेकिन आज हम हज़रत इब्राहीम के चौंका देनेवाले जवाब पर ध्यान देना चाहते हैं।

हज़रत इब्राहीम लंबे अरसे से हारान में रहता था। आज यह शहर तुरकी के जुनूब-मशरिक़ में वाक़े है। एक दिन ख़ुदा इब्राहीम से हमकलाम हुआ। इससे हम घर में बरकत लाने के बारे में एक पहला उसूल सीखते हैं :

मेरे पीछे हो लेना

ख़ुदा ने फ़रमाया,

> अपने वतन, अपने रिश्तेदारों और अपने बाप के घर को छोड़कर उस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।

► **इब्राहीम को क्या करना है?**

उसे अपने वतन और अपने घरवालों को छोड़ना है।

► **वह क्यों सब कुछ छोड़ जाए?**

इसलिए कि वह बुतपरस्तों से अलग होकर अपनी औलाद समेत ख़ुदा की क़ौम बन जाए, एक ऐसी क़ौम जो ख़ुदा के लिए मख़सूस-मुक़द्दस हो। इसके लिए यह भी ज़रूरी था कि उनका अपना मुल्क हो।

► **क्या ख़ुदा ने उसे बताया कि वह कहाँ जाए?**

नहीं। इतना कहा कि उस मुल्क में जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। तब ख़ुदा ने फ़रमाया,

> मैं तुझसे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा, तुझे बरकत दूँगा और तेरे नाम को बहुत बढ़ाऊँगा। तू दूसरों के लिए बरकत का बाइस होगा।

► **जब इब्राहीम अपना वतन छोड़ेगा तो उसके साथ क्या होगा?**

वह एक बड़ी क़ौम बनकर बरकत पाएगा। न सिर्फ़ यह—वह पूरी दुनिया के लिए बरकत का बाइस बनेगा।

ख़ुदा का यह तक़ाज़ा काफ़ी मुश्किल था। अपने वतन और लोगों को छोड़ने में तो बहुत बड़ा रिस्क था। अगर रास्ते में कुछ हुआ तो कोई नहीं

होगा जो उसकी मदद करे। और वह अंदाज़ा भी नहीं लगा सकता था कि ख़ुदा उसे कहाँ ले जा रहा है। उसे सिर्फ़ उतना ही मालूम था कि मुझे अपने लोगों और अपनी हिफ़ाज़त का जाल छोड़ना है।

► **क्या इब्राहीम ने ख़ुदा की सुनी?**

जी हाँ। लिखा है,

> अब्राम ने रब की सुनी और हारान से रवाना हुआ। लूत उसके साथ था। उस वक़्त अब्राम 75 साल का था। उसके साथ उसकी बीवी सारय और उसका भतीजा लूत थे। वह अपने नौकर-चाकरों समेत अपनी पूरी मिलकियत भी साथ ले गया जो उसने हारान में हासिल की थी। चलते चलते वह कनान पहुँचे।

आपने नोट किया होगा कि उस वक़्त इब्राहीम, अब्राम कहलाता था। बाद में हम देखेंगे कि उसका नाम किस तरह बदल गया।

► **इब्राहीम के साथ कौन कौन थे?**

उसकी बीवी सारय और भतीजा लूत। उसकी मिलकियत और तमाम नौकर-चाकर भी साथ थे।

► **चलते चलते वह कहाँ पहुँचे?**

वह कनान पहुँचे।

► **कनान कहाँ था?**

कनान वह इलाक़ा है जो आज इसराईल कहलाता है।

► **क्या यह मुल्क बाशिंदों से ख़ाली था?**

बिलकुल नहीं। उसमें कई-एक क़ौमें बसती थीं। लिखा है,

> अब्राम उस मुल्क में से गुज़रकर सिकम के मक़ाम पर ठहर गया जहाँ मोरिह के बलूत का दरख़्त था। उस ज़माने में मुल्क में कनानी क़ौमें आबाद थीं।
> वहाँ रब अब्राम पर ज़ाहिर हुआ और उससे कहा, "मैं तेरी औलाद को यह मुल्क दूँगा।" इसलिए उसने वहाँ रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह बनाई जहाँ वह उस पर ज़ाहिर हुआ था।

► **कनान में ख़ुदा ने इब्राहीम से क्या वादा किया?**

यह कि मैं तेरी औलाद को यह मुल्क दूँगा। पहुँचने से पहले उसे यह मालूम नहीं था। फिर भी उसे ख़ुदा के वादे पर पक्का यक़ीन था।

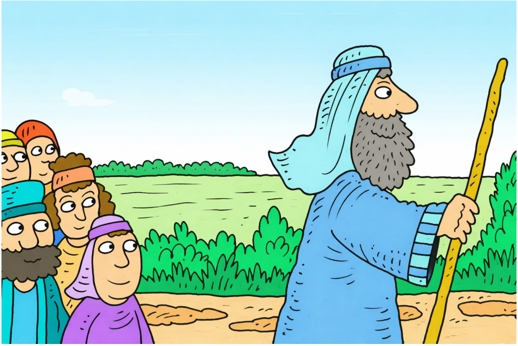

- **इब्राहीम ने जवाब में क्या किया?**

  उसने ख़ुदा की ताज़ीम में क़ुरबानगाह बनाई।

- **इससे वह क्या ज़ाहिर करना चाहता था?**

  यह कि मैं ख़ुदा के वादे पर ईमान रखता हूँ। देखो उसका ईमान। अब तक न इब्राहीम के बेटा पैदा हुआ था न उसे नए मुल्क में ज़मीन हासिल हुई थी। उसे सिर्फ़ इतना बताया गया था कि तेरी औलाद को यह मुल्क मिलेगा। लेकिन उसका ईमान पक्का रहा। फिर भी यह बात उसके दिल में खटकती रही कि बेटा नहीं है। इसलिए घर में बरकत लाने का दूसरा उसूल,

मुझसे चिमटा रहना

लिखा है,

> इसके बाद रब रोया में अब्राम से हमकलाम हुआ, “अब्राम, मत डर। मैं ही तेरी सिपर हूँ, मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज्र हूँ।”

► **ख़ुदा ने यहाँ क्यों फ़रमाया कि मत डर?**

इसलिए कि इब्राहीम अजनबी था। वह एक मुल्क में रहता था जिसमें कई क़िस्म की बुतपरस्त क़ौमें रहती थीं।

► **फिर भी ख़ुदा ने यह न कहा कि मैं तेरी हिफ़ाज़त करूँगा, मैं तुझे अज्र दूँगा। क्यों नहीं?**

इब्राहीम को यह बात समझना था कि ख़ुदा ख़ुद सिपर यानी ढाल है, वह ख़ुद बहुत बड़ा अज्र है। असल हिफ़ाज़त और अज्र इसमें है कि हम ख़ुदा से चिमटे रहें, चाहे ज़ाहिरी हालात अच्छे हों या बुरे।

► **क्या ख़ुदा आपकी सिपर और आपका अज्र है?**

यह बात सुनकर इब्राहीम ने क्या जवाब दिया? लिखा है,

> लेकिन अब्राम ने एतराज़ किया, “ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू मुझे क्या देगा जबकि अभी तक मेरे हाँ कोई बच्चा नहीं है और इलियज़र दमिश्क़ी मेरी मीरास पाएगा। तूने मुझे औलाद नहीं बख़्शी, इसलिए मेरे घराने का नौकर मेरा वारिस होगा।”

► **इब्राहीम ने क्या जवाब दिया?**

वह बोला, जब तक मेरे हाँ बच्चा नहीं है इसका क्या फ़ायदा है? फिर लिखा है,

तब अब्राम को अल्लाह से एक और कलाम मिला। “यह आदमी इलियज़र तेरा वारिस नहीं होगा बल्कि तेरा अपना ही बेटा तेरा वारिस होगा।” रब ने उसे बाहर ले जाकर कहा, “आसमान की तरफ़ देख और सितारों को गिनने की कोशिश कर। तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।”

► **ख़ुदा ने उससे क्या कहा? क्या उसने उसे झिड़की दी?**

नहीं। वह जानता था कि इब्राहीम बहुत मायूस है। उसने नरमी से फ़रमाया कि बाहर जाकर सितारों को गिनने की कोशिश कर। तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।

► **इससे हम क्या सीख सकते हैं?**

कभी कभी ख़ुदा की बरकत सालों तक नज़र नहीं आती। फिर भी मायूस नहीं होना चाहिए। मज़बूती से उसके साथ चिमटा रहना। घर में बरकत लाने का तीसरा उसूल,

मुझ पर भरोसा रखना

लिखा है कि

> अब्राम ने रब पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।

► **इब्राहीम ने रब के वादे पर क्या किया?**

उसने उस पर भरोसा रखा। कैसी बात! मियाँ-बीवी दोनों बूढ़े थे, और काफ़ी सालों से उनके बेटा पैदा नहीं हुआ था। फिर भी इब्राहीम ने ख़ुदा पर भरोसा रखा कि जो उसने फ़रमाया वह पूरा होगा। क्या आप ख़ुदा पर ऐसा भरोसा रखते हैं?

► **यह भरोसा देखकर ख़ुदा ने क्या किया?**

यह देखकर उसने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।

► **इसका क्या मतलब है?**

इब्राहीम तो इनसान ही था, इसलिए उससे ग़लतियाँ होती रहती थीं। फिर भी उसने ख़ुदा पर ऐसा भरोसा रखा कि ख़ुदा ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।

► **इसका हमारे लिए क्या मतलब है?**

हमसे भी ग़लतियाँ होती रहती हैं। हममें से कोई भी बेगुनाह नहीं है। इसलिए हम सब ख़ुदा की अदालत लायक़ हैं। हम सब इस लायक़ नहीं कि जन्नत में दाख़िल हों। लेकिन अगर हम ख़ुदा पर पूरा भरोसा रखें तो वह इस बिना पर हमें नजात देगा। जहाँ हमारा सवाब नाकाम है वहाँ हमारा ख़ुदा पर भरोसा और वफ़ादारी हमें उसकी अदालत से बचाती है।

यह पक्का करने के लिए उसने बाद में ईसा मसीह दुनिया में भेजा ताकि हमें नजात दिलाए। हम ख़ुद अपनी नजात के लिए कुछ नहीं कर सकते, लेकिन जब हम हाथ जोड़कर मिन्नत करते हैं कि मुझ पर रहम कर तब वह हमें नजात देता है।

हारान शहर से रवाना होते वक़्त इब्राहीम 75 साल का था। कनान में पहुँचने के बाद साल गुज़रते गए। वह 99 साल का हो गया, फिर भी बेऔलाद रहा। लेकिन ख़ुदा का हैरानकुन वादा पूरा होनेवाला था। लिखा है कि अल्लाह ने फ़रमाया,

> अब से तू अब्राम यानी 'अज़ीम बाप' नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा नाम इब्राहीम यानी 'बहुत क़ौमों का बाप' होगा। क्योंकि मैंने तुझे बहुत क़ौमों का बाप बना दिया है। [...] अपनी बीवी सारय का नाम भी बदल देना। अब से उसका नाम सारय नहीं बल्कि सारा यानी शहज़ादी होगा। मैं उसे बरकत बख़्शूँगा और तुझे उसकी मारिफ़त

> बेटा दूँगा। मैं उसे यहाँ तक बरकत दूँगा कि उससे क़ौमें बल्कि क़ौमों के बादशाह निकलेंगे।

► **ख़ुदा ने मियाँ-बीवी दोनों को नए नाम दिए। कौन-से नाम?**

अब से अब्राम, इब्राहीम कहलाएगा और सारय, सारा कहलाएगी।

► **क्यों?**

इब्राहीम का मतलब बहुत क़ौमों का बाप है। सारा का मतलब शहज़ादी है। इन नामों से ख़ुदा ने दिखाया कि मेरा वादा पूरा होनेवाला है। इब्राहीम के जवाब से हम घर में बरकत लाने का चौथा उसूल सीखते हैं, यह कि

शक मत करना

लिखा है,

> इब्राहीम मुँह के बल गिर गया। लेकिन दिल-ही-दिल में वह हँस पड़ा।

► **इब्राहीम का क्या जवाब था?**

वह दिल में हँस पड़ा। उसे यक़ीन नहीं आया। तब ख़ुदा ने फ़रमाया,

> तेरी बीवी सारा के हाँ बेटा पैदा होगा। तू उसका नाम इसहाक़ यानी 'वह हँसता है' रखना। मैं उसके और उसकी औलाद के साथ अबदी अहद बाँधूँगा।

► **क्या ख़ुदा ने इब्राहीम का रद्दे-अमल देखकर उसे डाँटा?**

नहीं, वह जानता था कि इब्राहीम की हँसी में बहुत सालों का तलख़ तजरबा छुपा हुआ है। इसलिए उसने नरमी से बात पक्की कर दी। उसने फ़रमाया कि एक साल के बाद एक बेटा पैदा होगा। उसका नाम इसहाक़ रखना। इसहाक़ का नाम मुँह में लेकर लोगों को याद रहेगा कि ख़ुदा ने कैसा मोजिज़ाना काम किया—इतना नाक़ाबिले-यक़ीन काम कि उसका बाप हँस पड़ा।

थोड़ी देर के बाद ख़ुदा फिर से इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ। उसने अपना फ़रमान दोहराया कि एक साल के बाद सारा के बेटा होगा। अब सारा का जवाब नोट करें। लिखा है,

> सारा यह बातें सुन रही थी, क्योंकि वह उसके पीछे ख़ैमे के दरवाज़े के पास थी। दोनों मियाँ-बीवी बूढ़े हो चुके थे

> और सारा उस उम्र से गुज़र चुकी थी जिसमें औरतों के बच्चे पैदा होते हैं। इसलिए सारा अंदर ही अंदर हँस पड़ी और सोचा, “यह कैसे हो सकता है? क्या जब मैं बुढ़ापे के बाइस घिसे-फटे लिबास की मानिंद हूँ तो जवानी के जोबन का लुत्फ़ उठाऊँ? और मेरा शौहर भी बूढ़ा है।”

► **क्या सारा का रदे-अमल इब्राहीम से फ़रक़ था?**

बिलकुल नहीं। वह भी हँस पड़ी। तब ख़ुदा ने पूछा,

> सारा क्यों हँस रही है? [...] क्या रब के लिए कोई काम नामुमकिन है?

► **ख़ुदा सारा को डाँट सकता था। क्या उसने ऐसा किया?**

> नहीं। उसने इतना फ़रमाया कि क्या रब के लिए कोई काम नामुमकिन है? जब हम मायूस हैं तो क्या हमें याद रहती है कि ख़ुदा के लिए कोई काम नामुमकिन नहीं है?

हम घर में बरकत लाने के चार उसूल सीख चुके हैं। बड़ी बात यह है कि हम ख़ुदा के पीछे हो लें, उससे चिमटे रहें, उस पर भरोसा रखें और शक न करें। यह किया तो देखेंगे कि

तब बरकत यक़ीनी है

एक साल गुज़र गया तो ख़ुदा का वादा सचमुच पूरा हुआ। लिखा है,

> तब रब ने सारा के साथ वैसा ही किया जैसा उसने फ़रमाया था। जो वादा उसने सारा के बारे में किया था उसे उसने पूरा किया। वह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। ऐन उस वक़्त बूढ़े इब्राहीम के हाँ बेटा पैदा हुआ जो अल्लाह ने मुक़र्रर करके उसे बताया था।
>
> इब्राहीम ने अपने इस बेटे का नाम इसहाक़ यानी 'वह हँसता है' रखा।
>
> [...] सारा ने कहा, "अल्लाह ने मुझे हँसाया, और हर कोई जो मेरे बारे में यह सुनेगा हँसेगा। इससे पहले कौन इब्राहीम से यह कहने की जुर्रत कर सकता था कि सारा अपने बच्चों को दूध पिलाएगी? और अब मेरे हाँ बेटा पैदा हुआ है, अगरचे इब्राहीम बूढ़ा हो गया है।"

आख़िर में ख़ुदा ने अपना वादा पूरा किया था। बहुत साल गुज़र गए थे जिनके दौरान मियाँ-बीवी ने सीख लिया था कि ख़ुदा के पीछे हो लेने का मतलब क्या है—अपना वतन छोड़कर एक नामालूम मुल्क में जाना जिसमें कई क़िस्म के ख़तरों का सामना करना पड़ेगा। लेकिन उसके पीछे हो लेने से उन्हें बहुत बरकत मिली—ऐसी बरकत जो उन्हें हारान में रहकर कभी नहीं मिलनी थी। साथ साथ उन्होंने सीख लिया कि इसमें बरकत है कि हम हर वक़्त ख़ुदा से चिमटे रहें, हर वक़्त उस पर भरोसा रखें, हर वक़्त याद रखें कि उसके लिए कोई काम नामुमकिन नहीं है।

► **क्या आपको ऐसी बरकत हासिल हुई है?**

तौरेत, पैदाइश 12–18

[12:1-7]

रब ने अब्राम से कहा, "अपने वतन, अपने रिश्तेदारों और अपने बाप के घर को छोड़कर उस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। मैं तुझसे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा, तुझे बरकत दूँगा और तेरे नाम को बहुत बढ़ाऊँगा। तू दूसरों के लिए बरकत का बाइस होगा। जो तुझे बरकत देंगे उन्हें मैं भी बरकत दूँगा। जो तुझ पर लानत करेगा उस पर मैं भी लानत करूँगा। दुनिया की तमाम क़ौमें तुझसे बरकत पाएँगी।"

अब्राम ने रब की सुनी और हारान से रवाना हुआ। लूत उसके साथ था। उस वक़्त अब्राम 75 साल का था। उसके साथ उसकी बीवी सारय और उसका भतीजा लूत थे। वह अपने नौकर-चाकरों समेत अपनी पूरी मिलकियत भी साथ ले गया जो उसने हारान में हासिल की थी। चलते चलते वह कनान पहुँचे। अब्राम उस मुल्क में से गुज़रकर सिकम के मक़ाम पर ठहर गया जहाँ मोरिह के बलूत का दरख़्त था। उस ज़माने में मुल्क में कनानी क़ौमें आबाद थीं। वहाँ रब अब्राम पर ज़ाहिर हुआ और उससे कहा, "मैं तेरी औलाद को यह मुल्क दूँगा।" इसलिए उसने वहाँ रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह बनाई जहाँ वह उस पर ज़ाहिर हुआ था।

[15:1-6]

इसके बाद रब रोया में अब्राम से हमकलाम हुआ, “अब्राम, मत डर। मैं ही तेरी सिपर हूँ, मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज्र हूँ।”

लेकिन अब्राम ने एतराज़ किया, “ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू मुझे क्या देगा जबकि अभी तक मेरे हाँ कोई बच्चा नहीं है और इलियज़र दमिश्क़ी मेरी मीरास पाएगा। तूने मुझे औलाद नहीं बख़्शी, इसलिए मेरे घराने का नौकर मेरा वारिस होगा।”

तब अब्राम को अल्लाह से एक और कलाम मिला। “यह आदमी इलियज़र तेरा वारिस नहीं होगा बल्कि तेरा अपना ही बेटा तेरा वारिस होगा।” रब ने उसे बाहर ले जाकर कहा, “आसमान की तरफ़ देख और सितारों को गिनने की कोशिश कर। तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।”

अब्राम ने रब पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।

[17:3-5.17]

अल्लाह ने उससे कहा, “[…] अब से तू अब्राम यानी ‘अज़ीम बाप’ नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा नाम इब्राहीम यानी ‘बहुत क़ौमों का बाप’ होगा। क्योंकि मैंने तुझे बहुत क़ौमों का बाप बना दिया है। […] अपनी बीवी सारय का नाम भी बदल देना। अब से उसका नाम सारय नहीं बल्कि सारा यानी शहज़ादी होगा। मैं उसे बरकत

बख़्शूँगा और तुझे उसकी मारिफ़त बेटा दूँगा। मैं उसे यहाँ तक बरकत दूँगा कि उससे क़ौमें बल्कि क़ौमों के बादशाह निकलेंगे।”
इब्राहीम मुँह के बल गिर गया। लेकिन दिल-ही-दिल में वह हँस पड़ा।

[18:10-14]

रब ने कहा, “ऐन एक साल के बाद मैं वापस आऊँगा तो तेरी बीवी सारा के बेटा होगा।”
सारा यह बातें सुन रही थी, क्योंकि वह उसके पीछे ख़ैमे के दरवाज़े के पास थी। दोनों मियाँ-बीवी बूढ़े हो चुके थे और सारा उस उम्र से गुज़र चुकी थी जिसमें औरतों के बच्चे पैदा होते हैं। इसलिए सारा अंदर ही अंदर हँस पड़ी और सोचा, “यह कैसे हो सकता है? क्या जब मैं बुढ़ापे के बाइस घिसे-फटे लिबास की मानिंद हूँ तो जवानी के जोबन का लुत्फ़ उठाऊँ? और मेरा शौहर भी बूढ़ा है।”
रब ने इब्राहीम से पूछा, “सारा क्यों हँस रही है? […] क्या रब के लिए कोई काम नामुमकिन है? एक साल के बाद मुक़र्ररा वक़्त पर मैं वापस आऊँगा तो सारा के बेटा होगा।”

[19:1-9]

तब रब ने सारा के साथ वैसा ही किया जैसा उसने फ़रमाया था। जो वादा उसने सारा के बारे में किया था उसे उसने पूरा किया। वह

हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। ऐन उस वक़्त बूढ़े इब्राहीम के हाँ बेटा पैदा हुआ जो अल्लाह ने मुक़र्रर करके उसे बताया था। इब्राहीम ने अपने इस बेटे का नाम इसहाक़ यानी ‘वह हँसता है’ रखा। [...] सारा ने कहा, “अल्लाह ने मुझे हँसाया, और हर कोई जो मेरे बारे में यह सुनेगा हँसेगा। इससे पहले कौन इब्राहीम से यह कहने की जुर्रत कर सकता था कि सारा अपने बच्चों को दूध पिलाएगी? और अब मेरे हाँ बेटा पैदा हुआ है, अगरचे इब्राहीम बूढ़ा हो गया है।”